

शेख़ फ़रीद - सबद ९
जे जाणा लडु छिजणा पीडी पाई गंढि ॥
सलोक, शेख़ फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

जे जाणा लडु छिजणा पीडी पाई गंढि ॥
तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥

सार: अपने आंतरिक मूल्यों को मजबूत करना यह सुनिश्चित करता है कि हमारे विचार हमारे काम के अनुरूप रहें। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारे चुनाव को हमारे मूल विश्वास के साथ मेल खाने चाहिए न कि बाहरी अपेक्षाओं और दबावों के आगे झुककर किए जाने चाहिए। अपने धारणाओं को अपनाना विद्रोह करना नहीं है बल्कि अपने सच्चे स्वभाव के प्रति ईमानदार रहते हुए अपने आसपास के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डालना है।

जे जाणा लडु छिजणा पीडी पाई गंढि ॥

अगर मुझे पता होता कि मेरी चादर ढीली हो जाएगी तो मैं मजबूत गांठ बांधता। यह इस बात का प्रतीक है कि अपने आंतरिक मूल्यों को दृढ़ता से संवारना चाहिए ताकि विचार आत्मा से न भटके।

तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥

मुझे सर्वव्यापी जागरूकता से बड़ी कोई चीज़ नहीं मिली है; मैं दुनिया भर में खोजते-खोजते थक गया हूँ। यह दर्शाता है कि किसी के जन्मजात मूल्यों की प्रवृत्ति से ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।

(५)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि हमारे जन्मजात मूल्य जो हमारी प्रवृत्तियों का मार्गदर्शन करते हैं सबसे महत्वपूर्ण गुण हैं। ये हमारी विशिष्टताओं का सम्मान कर प्रमाण प्रदान करते हैं, व्यक्तिगत विकास को पोषित करते हैं और हमें आत्म-बोध की दिशा में ले जाते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com